बी ए भूगोल पार्ट-2, पेपर-IV, इकाई-1

विश्व में कृषि के प्रकार (Types of Farming in the World)

मिट्टी पर खेती करने, फसल उगाने और पशुओं को पालने की कला और विज्ञान को कृषि कहते हैं। विश्व के विभिन्न भागों में मौजूद भिन्न-भिन्न भौतिक और सामाजिक - आर्थिक दशा में विभिन्न प्रकार की कृषि व्यवस्था शुरू हुई। कृषि करने की विधि के आधार पर कृषि निम्नलिखित प्रकार की है:

1. जीवन निर्वहन कृषि - आदम जीवन निर्वहन कृषि तथा गहन जीवन निर्वहन कृषि
2. रोपण कृषि
3. विस्तृत वाणिज्य खाद्यान्न कृषि
4. मिश्रित कृषि
5. डेयरी फार्मिंग
6. भूमध्यसागरीय कृषि
7. हॉर्टिकल्चर / ट्रक फार्मिंग
8. सहकारी कृषि
9. सामूहिक कृषि इत्यादि

जीवन निर्वहन कृषि

जीवन निर्वहन कृषि में कृषि के सारे उत्पादों को उपभोग कर लिया जाता है। यह दो प्रकार का होता है:

1. आदम जीवन निर्वहन कृषि और
2. गहन जीवन निर्वहन कृषि

आदम जीवन निर्वाहन कृषि

इसे स्थानांतरित कृषि (Shifting Farming) भी कहते हैं। इसमें जंगल के किसी भाग को साफ किया जाता है। पेड़ पौधों को जला दिया जाता है और उसकी राख भूमि की उर्वरता बढ़ा देती है। इसलिए इसे काटो और जलाओ कृषि (Slash and burn Framing) भी कहते हैं। कुछ समय के बाद (जैसे 3-5 साल) मिट्टी अपनी उर्वरता खो देती है तब फिर दूसरे जगह जाकर वहां जंगल काटकर साफ करके खेती की जाती है। फिर कुछ दिनों के बाद वापस पहले वाले स्थान पर चले आते हैं। यह कृषि बहुत ही आदम उपकरणों के साथ की जाती है, जैसे की लाठी और कुदाल। इसमें सिर्फ मोटे अनाज बोये जाते हैं जो वर्षा पर आधारित होते हैं। यह विश्व के

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में जनजातियों द्वारा की जाती है और प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग नामों से जाना जाता है:

रे - वियतनाम तथा लाओ

टावी - मलागासी

मसोले - मध्य अफ्रीका कांगो जायरे नदी घाटी क्षेत्र

लोगन - पश्चिम अफ्रीका

बारबेका - कोनूल/ मेक्सिको, कोमिले

मिल्पा - मध्य अमेरिका यूकाटन, ग्वाटेमाला मेक्सिको

कोनूको - ब्राजील एवं वेनेजुएला

चेन्ना - श्रीलंका

लडांग - इंडोनेशिया एवं मलेशिया

झूम - उत्तर पूर्वी भारत

गहन जीवन निर्वहन कृषि

यह मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया यानी कि मानसून एशिया में प्रचलित है । यह दो प्रकार का होता है

<u>चावल प्रधान निर्वाहन कृषि</u>:

इसमें मुख्य फसल धान है और यह ऐसे क्षेत्र में होता है जहां वर्षा और जनसंख्या बहुत घनी होती है । परिवार के सदस्य ही खेतों में काम करते हैं । उनके पास तकनीकी ज्यादा उपलब्ध नहीं है । वह घरेलू खादों का ही प्रयोग करते हैं । हालांकि उपज अच्छी होती है परंतु श्रम की उत्पादकता कम होती है ।

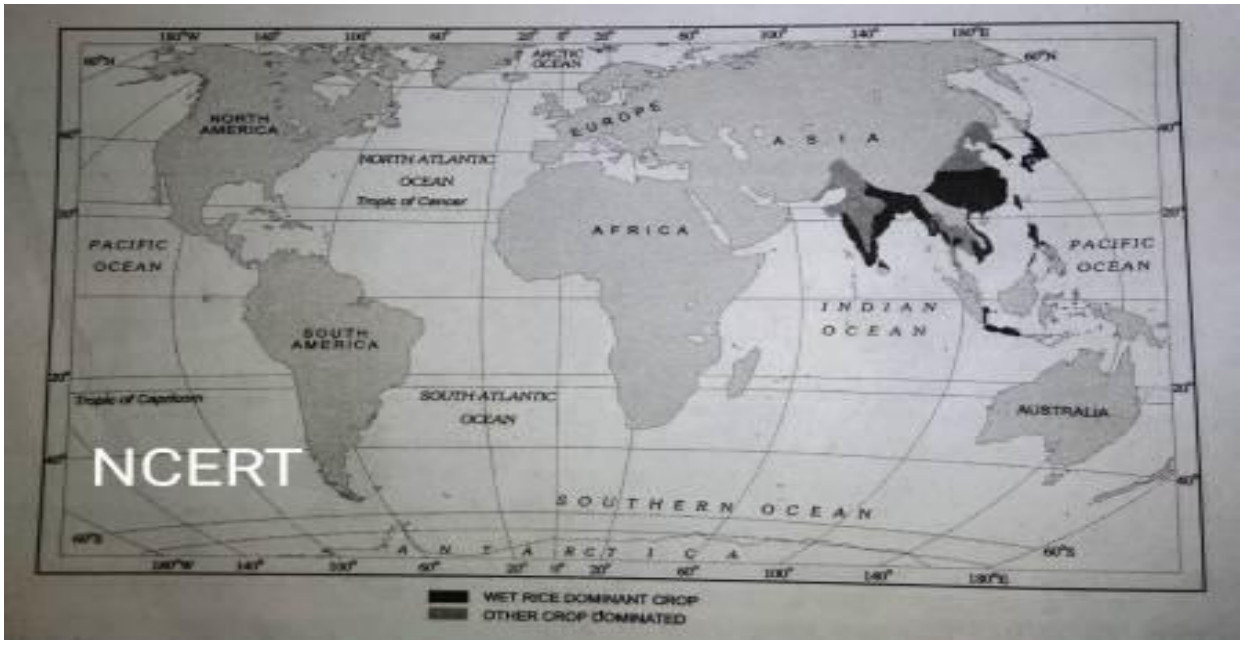

<u>चावल रही जीवन निर्वाह कृषि</u>

इसमें चावल के अतिरिक्त अन्य फसल जैसे कि गेहूं, सोयाबीन, जो और चारा फसल प्रधान है । वैसे क्षेत्र जहां की उच्चावच, जलवायु तथा मिट्टी आदि चावल के उगाने लायक नहीं है, वैसे क्षेत्रों में इनकी कृषि की जाती है । ऐसे क्षेत्रों में सिंचाई शायद ही कभी की जाती हो ।
प्रमुख क्षेत्र: उत्तरी चीन, मंचूरिया, नॉर्थ कोरिया, उत्तरी जापान, भारत में सिंधु गंगा मैदान का उत्तरी पश्चिमी भाग ।

रोपण कृषि

जब यूरोपियों ने विश्व के विभिन्न भागों को अपना उपनिवेश बनाया तब उन्होंने एक विभिन्न प्रकार के रोपण कृषि का प्रचलन किया जो मुख्य रूप से लाभ आधारित और व्यापक पैमाने पर किया जाता था ।

<u>प्रमुख फसल: चाय, कॉफी, कोकोआ, रबर, कपास, तेल ताल, गन्ना, केला तथा अन्नानास</u>

रोपण कृषि की प्रमुख विशेषताएं:

- कृषि भूमि विस्तृत होती है जिसे इस्टेट कहा जाता है
- अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता होती है
- अच्छा प्रबंधन भी होना चाहिए

- तकनीकी सहायता उपलब्ध होनी चाहिए
- कृषि के लिए वैज्ञानिक तरीका होना चाहिए
- एक इस्टेट में एक ही फसल उत्पन्न किया जाता है
- सस्ते श्रम की आवश्यकता होती है
- इस्टेट से कारखाने और बाजार में फसल उत्पादन को पहुंचाने के लिए अच्छी यातायात व्यवस्था आवश्यक होती है
-

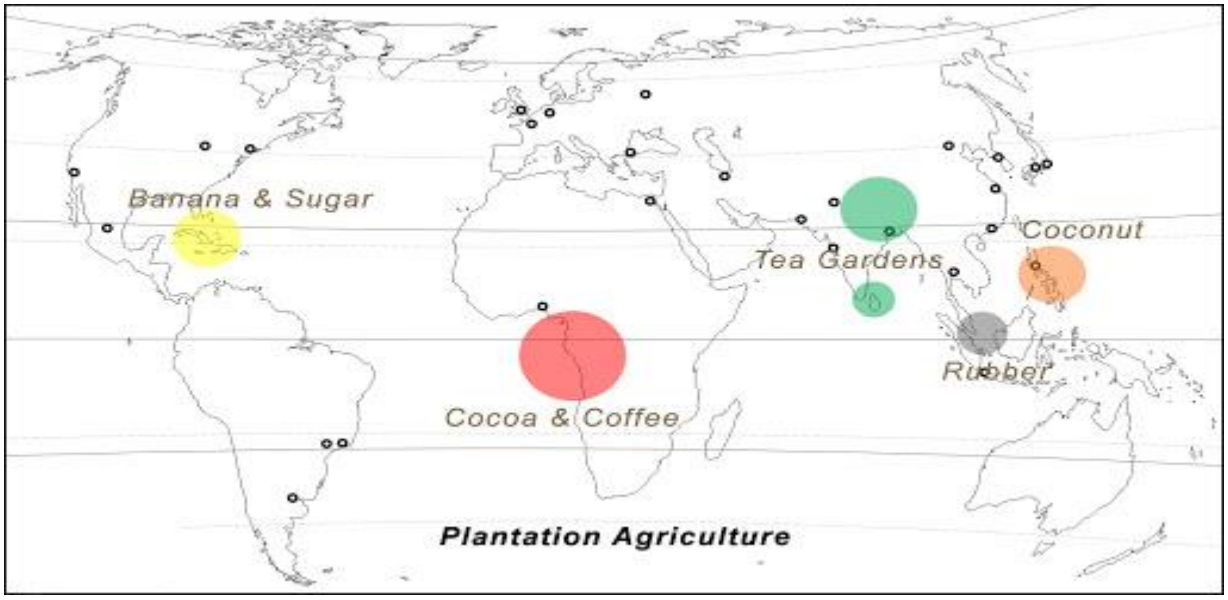

चित्र: विश्व में रोपण कृषि (इन्टरनेट- amit-sengupta.com)

विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न यूरोपीय देशों ने रोपण कृषि स्थापित की जोकि निम्नलिखित है: फ़्रांस कोकोआ और कॉफी पश्चिमी अफ्रीका

ब्रिटेन	चाय बागान	भारत, श्रीलंका
ब्रिटेन	रबड़	मलेशिया
ब्रिटेन	गन्ना	वेस्टइंडीज
ब्रिटेन	केला	वेस्टइंडीज
स्पेन और अमेरिका	नारियल और गन्ना	फिलीपीन्स

ब्राजील के कॉफी बागानों को ***फजेंडा*** कहा जाता है जिसे आज भी कई जगह यूरोपीय ही प्रबंध करते हैं। हालांकि वर्तमान समय में अधिकांश रोपण कृषि पर वहां की सरकार का अधिकार हो गया है। क्रमशः.....

- सन्दर्भ: विश्व का भूगोल: महेश वर्णवाल, एन सी ई आर टी, INTERNET

बोलेन्द्र कुमार अगम, सहायक प्राध्यापक, भूगोल, राजा सिंह कॉलेज, सिवान